3 अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

अयोध्यासिंह उपाध्याय का जन्म 15 अप्रैल, सन् 1865 ई० में निजामाबाद, जिला आजमगढ़ (उ० प्र०) में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० भोलासिंह उपाध्याय था। पाँच वर्ष की अवस्था में फारसी के माध्यम से इनकी शिक्षा प्रारम्भ हुई। वर्नाक्यूलर मिडिल पास करके ये क्वींस कालेज, बनारस में अंग्रेजी पढ़ने गये, पर अस्वस्थता के कारण अध्ययन छोड़ना पड़ा। स्वाध्याय से इन्होंने हिन्दी, संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी में अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। निजामाबाद के मिडिल स्कूल के अध्यापक, कानूनगो और काशी विश्वविद्यालय में अवैतनिक शिक्षक के पदों पर इन्होंने कार्य किया। 6 मार्च, सन् 1947 ई० में इनका देहावसान हो गया।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—15 अप्रैल, सन् 1865 ई०।
- **जन्म-स्थान**—निजामाबाद (आजमगढ़)।
- **पिता**—भोलासिंह उपाध्याय।
- **माता**—रुक्मिणी देवी।
- **शिक्षा :** स्वाध्याय से विभिन्न भाषाओं का ज्ञान।
- **भाषा :** ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली।
- **शैली :** प्रबन्ध एवं मुक्तक।
- **प्रमुख रचनाएँ**—प्रिय प्रवास, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, वैदेही-वनवास।
- **मृत्यु**–6 मार्च, सन् 1947 ई०।

हरिऔधजी द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि और गद्य लेखक थे। इनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ **'प्रियप्रवास'** (खड़ीबोली का प्रथम महाकाव्य), **'वैदेही वनवास'** (करुणरस-प्रधान महाकाव्य), **'पारिजात'** (स्फुट गीतों का क्रमबद्ध संकलन), **'चुभते चौपदे'**, **'चोखे चौपदे'** (दोनों बोलचाल वाली मुहावरों से युक्त भाषा में लिखित स्फुट काव्य-संग्रह) और **'रसकलश'** (ब्रजभाषा के छन्दों का संकलन) हैं। **'अधखिला फूल'** (उपन्यास), **'ठेठ हिन्दी का ठाठ'** (उपन्यास) **'रुक्मिणी परिणय'** (नाटक) आदि मौलिक गद्य रचनाओं के अतिरिक्त आलोचनात्मक और अनूदित रचनाएँ भी इनकी हैं।

हरिऔधजी पहले ब्रजभाषा में कविता किया करते थे, 'रसकलश' इसका सुन्दर उदाहरण है। महावीरप्रसाद द्विवेदी के प्रभाव से ये खड़ीबोली के क्षेत्र में आये और खड़ीबोली काव्य को नया रूप प्रदान किया। भाषा, भाव, छन्द और अभिव्यंजना की घिसी-पिटी परम्पराओं को तोड़कर इन्होंने नयी मान्यताएँ स्थापित ही नहीं कीं, अपितु उन्हें मूर्त रूप भी प्रदान किया। इनकी बहुमुखी प्रतिभा और साहस के कारण ही काव्य के भाव-पक्ष और कला-पक्ष को नवीन आयाम प्राप्त हुए।

वर्ण्य-विषय की विविधता हरिऔधजी की प्रमुख विशेषता है। यही कारण है कि इनके काव्य-वृत्त में भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के उज्ज्वल बिन्दु समाहित हो सके हैं। प्राचीन कथानकों में नवीन उद्भावनाओं के दर्शन 'प्रियप्रवास', 'वैदेही वनवास' आदि सभी रचनाओं में होते हैं। ये काव्य के 'शिव' रूप का सदैव ध्यान रखते थे। इसी हेतु इनके राधा-कृष्ण, राम-सीता भक्तों के भगवान् मात्र न होकर जननायक और जनसेवक हैं। प्रकृति के विविध रूपों और प्रकारों का सजीव चित्रण हरिऔधजी की अन्यान्य विशेषताओं में से एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। भावुकता के साथ मौलिकता को भी इनके काव्य की विशेषता कहा जा सकता है। हरिऔधजी मूलतः करुण और

वात्सल्य रस के कवि थे। करुण रस को ये प्रधान रस मानते थे और उसकी मार्मिक व्यंजना इनके काव्य में सर्वत्र देखने को मिलती है। वात्सल्य और विप्रलम्भ शृंगार के हृदयस्पर्शी चित्र प्रियप्रवास में यथेष्ट हैं। अन्य रसों के भी सुन्दर उदाहरण इनके स्फुट काव्य में मिलते हैं।

भाषा की जैसी विविधता हरिऔधजी के काव्य में है, वैसी विविधता महाकवि निराला के अतिरिक्त अन्य किसी के काव्य में नहीं है। इन्होंने कोमलकान्त पदावलीयुक्त ब्रजभाषा—'रसकलश' में, संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली—'प्रियप्रवास' में, मुहावरेयुक्त बोलचाल की खड़ीबोली—'चोखे चौपदे' और 'चुभते चौपदे' में पूर्ण अधिकार और सफलता के साथ प्रयुक्त की है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसीलिए इन्हें 'द्विकलात्मक कला' में सिद्धहस्त कहा है। इन्होंने प्रबन्ध और मुक्तक शैलियों में सफल काव्य-रचनाएँ की हैं। इतिवृत्तात्मक, मुहावरेदार, संस्कृत काव्य, चमत्कारपूर्ण सरल हिन्दी शैलियों का अभिव्यंजना-शिल्प की दृष्टि से सफल प्रयोग भी किया है।

अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग इनके काव्य में है। इन्होंने हिन्दी के पुराने तथा संस्कृत छन्दों को अपनाया है। कवित्त, सवैया, छप्पय, दोहा इनके पुराने प्रिय छन्द हैं और इन्द्रवज्रा, शार्दूलविक्रीड़ित, शिखरिणी, मालिनी, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित आदि संस्कृत वर्णवृत्तों का प्रयोग कर इन्होंने हिन्दी छन्दों के क्षेत्र में युगान्तर ही उपस्थित कर दिया।

ये 'कविसम्राट्', 'साहित्य वाचस्पति' आदि उपाधियों से सम्मानित हुए। अपने जीवनकाल में अनेक साहित्य सभाओं और हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति रहे। हरिऔध की साहित्यिक सेवाओं का ऐतिहासिक महत्त्व है। निस्सन्देह ये हिन्दी साहित्य के गौरव थे।

पवन-दूतिका

[संस्कृत साहित्य के मेघदूत, हंसदूत आदि की प्रणाली पर हरिऔधजी ने भी अपने प्रिय-प्रवास में वियोगिनी राधा से पवन को दूती बनाकर कृष्ण के पास सन्देश भिजवाया है। कवि द्वारा चित्रित राधा के विरह-कातरा रूप से कहीं बढ़कर परदुःखकातरा स्वरूप विशेष द्रष्टव्य है। लोक-सेविका राधा की उदात्त भावनाएँ उनके चरित्र को नवीनता प्रदान करती हैं।]

बैठी खिन्ना यक दिवस वे गेह में थीं अकेली।
आके आँसू दृग-युगल में थे धरा को भिगोते।
आई धीरे इस सदन में पुष्प-सद्‌गंध को ले।
प्रातः वाली सुपवन इसी काल वातायनों से।।1।।

संतापों को विपुल बढ़ता देख के दुःखिता हो।
धीरे बोलीं स-दुख उससे श्रीमती राधिका यों।
प्यारी प्रातः पवन इतना क्यों मुझे है सताती।
क्या तू भी है कलुषित हुई काल की क्रूरता से।।2।।

मेरे प्यारे नव जलद से कंज से नेत्र वाले।
जाके आये न मधुवन से औ न भेजा सँदेसा।
मैं रो-रो के प्रिय-विरह से बावली हो रही हूँ।
जा के मेरी सब दुख-कथा श्याम को तू सुना दे।।3।।

ज्यों ही मेरा भवन तज तू अल्प आगे बढ़ेगी।
शोभावाली सुखद कितनी मंजु कुंजें मिलेंगी।
प्यारी छाया मृदुल स्वर से मोह लेंगी तुझे वे।
तो भी मेरा दुख लख वहाँ जा न विश्राम लेना।।4।।

थोड़ा आगे सरस रव का धाम सत्पुष्पवाला।
अच्छे-अच्छे बहु द्रुम लतावान सौन्दर्यशाली।
प्यारा वृन्दाविपिन मन को मुग्धकारी मिलेगा।
आना जाना इस विपिन से मुह्यमाना न होना।।5।।

जाते जाते अगर पथ में क्लान्त कोई दिखावे।
तो जाके सन्निकट उसकी क्लान्तियों को मिटाना।
धीरे धीरे परस करके गात उत्ताप खोना।
सद्‌गंधों से श्रमित जन को हर्षितों सा बनाना।।6।।

लज्जाशीला पथिक महिला जो कहीं दृष्टि आये।
होने देना विकृत-वसना तो न तू सुन्दरी को।
जो थोड़ी भी श्रमित वह हो गोद ले श्रान्ति खोना।
होंठों की औ कमल-मुख की म्लानलायें मिटाना।।7।।

कोई क्लान्ता कृषक-ललना खेत में जो दिखावे।
धीरे धीरे परस उसकी क्लान्तियों को मिटाना।
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला।
छाया द्वारा सुखित करना, तप्त भूतांगना को।।8।।

जाते जाते पहुँच मथुरा-धाम में उत्सुका हो।
न्यारी शोभा वर नगर की देखना मुग्ध होना।
तू होवेगी चकित लख के मेरु से मन्दिरों को।
आभावाले कलश जिनके दूसरे अर्क से हैं।।9।।

देखे पूजा समय मथुरा मन्दिरों मध्य जाना।
नाना वाद्यों मधुर स्वर की मुग्धता को बढ़ाना।
किंवा ले के रुचिर तरु के शब्दकारी फलों को।
धीरे-धीरे मधुर रव से मुग्ध हो हो बजाना।।10।।

तू देखेगी जलद-तन को जा वहीं तद्गता हो।
होंगे लोने नयन उनके ज्योति-उत्कीर्णकारी।
मुद्रा होगी वर वदन की मूर्ति-सी सौम्यता की।
सीधे साधे वचन उनके सिक्त होंगे सुधा से।।11।।

नीले फूले कमल दल सी गात की श्यामता है।
पीला प्यारा वसन कटि में पैन्हते हैं फबीला।
छूटी काली अलक मुख की कान्ति को है बढ़ाती।
सद्वस्त्रों में नवल तन की फूटती सी प्रभा है।।12।।

साँचे ढाला सकल वपु है दिव्य सौन्दर्यशाली।
सत्पुष्पों-सी सुरभि उसकी प्राण-संपोषिका है।
दोनों कंधे वृषभ-वर से हैं बड़े ही सजीले।
लम्बी बाँहें कलभ-कर सी शक्ति की पेटिका हैं।।13।।

राजाओं सा शिर पर लसा दिव्य आपीड़ होगा।
शोभा होगी उभय श्रुति में स्वर्ण के कुण्डलों की।
नाना रत्नाकलित भुज में मंजु केयूर होंगे।
मोतीमाला लसित उनका कम्बु सा कंठ होगा।।14।।

तेरे में है न यह गुण जो तू व्यथायें सुनाये।
व्यापारों को प्रखर मति औ युक्तियों से चलाना।
बैठे जो हों निज सदन में मेघ सी कान्तिवाले।
तो चित्रों को इस भवन के ध्यान से देख जाना।।15।।

जो चित्रों में विरह-विधुरा का मिले चित्र कोई।
तो जा जाके निकट उसको भाव से यों हिलाना।
प्यारे हो के चकित जिससे चित्र को और देखें।
आशा है यों सुरति उनको हो सकेगी हमारी।।16।।

जो कोई भी इस सदन में चित्र उद्यान का हो।
औ हों प्राणी विपुल उसमें घूमते बावले से।
तो जाके सन्निकट उसके औ हिला के उसे भी।
देवात्मा को सुरति ब्रज के व्याकुलों की कराना।।17।।

कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो।
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को।
यों देना ऐ पवन बतला फूल सी एक बाला।
म्लाना हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है।।18।।

जो प्यारे मंजु उपवन या वाटिका में खड़े हों।
छिद्रों में जा क्वणित करना वेणु सा कीचकों को।
यों होवेगी सुरति उनको सर्व गोपांगना की।
जो हैं वंशी श्रवण-रुचि से दीर्घ उत्कण्ठ होतीं।।19।।

ला के फूले कमलदल को श्याम के सामने ही।
थोड़ा थोड़ा विपुल जल में व्यग्र हो हो डुबाना।
यों देना ऐ भगिनि जतला एक अंभोजनेत्रा।
आँखों को हो विरह-विधुरा वारि में बोरती है।।20।।

धीरे लाना वहन कर के नीप का पुष्प कोई।
औ प्यारे के चपल दृग के सामने डाल देना।
ऐसे देना प्रकट दिखला नित्य आशंकिता हो।
कैसी होती विरहवश मैं नित्य रोमांचिता हूँ।।21।।

बैठे नीचे जिस विटप के श्याम होवें उसीका।
कोई पत्ता निकट उनके नेत्र के ले हिलाना।
यों प्यारे को विदित करना चातुरी से दिखाना।
मेरे चिन्ता-विजित चित का क्लान्त हो काँप जाना।।22।।

सूखी जाती मलिन लतिका जो धरा में पड़ी हो।
तो पाँवों के निकट उसको श्याम के ला गिराना।
यों सीधे से प्रकट करना प्रीति से वंचिता हो।
मेरा होना अति मलिन औ सूखते नित्य जाना।।23।।

कोई पत्ता नवल तरु का पीत जो हो रहा हो।
तो प्यारे के दृग युगल के सामने ला उसे ही।
धीरे धीरे सँभल रखना औ उन्हें यों बताना।
पीला होना प्रबल दुख से प्रोषिता सा हमारा।।24।।

यों प्यारे को विदित करके सर्व मेरी व्यथायें।
धीरे धीरे वहन कर के पाँव की धूलि लाना।
थोड़ी सी भी चरण-रज जो ला न देगी हमें तू।
हा! कैसे तो व्यथित चित को बोध मैं दे सकूँगी।।25।।

पूरी होवें न यदि तुझसे अन्य बातें हमारी।
तो तू मेरी विनय इतनी मान ले और चली जा।
छू के प्यारे कमल-पग को प्यार के साथ आ जा।
जी जाऊँगी हृदयतल में मैं तुझी को लगाके।।26।।

('प्रियप्रवास' से)

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(पवन-दूतिका)

(क) बैठी खिन्ना यक दिवस वे गेह में थीं अकेली।
आके आँसू दृग-युगल में थे धरा को भिगोते।
आई धीरे इस सदन में पुष्प-सद्‌गंध को ले।
प्रातः वाली सुपवन इसी काल वातायनों से।।
संतापों को विपुल बढ़ता देख के दुःखिता हो।
धीरे बोलीं स-दुख उससे श्रीमती राधिका यों।
प्यारी प्रातः पवन इतना क्यों मुझे है सताती।
क्या तू भी है कलुषित हुई काल की क्रूरता से।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) राधा ने प्रातःकालीन वायु से दुःखित होकर क्या कहा?
(iii) उपर्युक्त पद्यांश में किस प्रसंग का चित्रण हुआ है?
(iv) इस पद्यांश में कौन-सा छन्द है?
(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) लज्जाशीला पथिक महिला जो कहीं दृष्टि आये।
होने देना विकृत-वसना तो न तू सुन्दरी को।
जो थोड़ी भी श्रमित वह हो गोद ले श्रान्ति खोना।
होंठों की औ कमल-मुख की म्लानतायें मिटाना।।
कोई क्लान्ता कृषक-ललना खेत में जो दिखावे।
धीरे धीरे परस उसकी क्लान्तियों को मिटाना।
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला।
छाया द्वारा सुखित करना, तप्त भूतांगना को।। **[2020 ZN]**

प्रश्न– (i) दिये गये पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) राधा पवन-दूतिका से राह में पथिकों के साथ कैसा व्यवहार करने को कहती है?
(iii) इस पद्यांश में कवि ने किसका चित्रण किया है?
(iv) इस पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(vi) वियोगिनी राधा लज्जाशीला महिला के लिए पवन से क्या कहती है?
(vii) राधा कृषक ललना की थकावट को दूर करने के लिए पवन को क्या समझाती है?
(viii) व्योम और भूतांगना का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) जो प्यारे मंजु उपवन या वाटिका में खड़े हों।
छिद्रों में जा क्वणित करना वेणु सा कीचकों को।
यों होवेगी सुरति उनको सर्व गोपांगना की।
जो हैं वंशी श्रवण-रुचि से दीर्घ उत्कण्ठ होतीं।।
लाके फूले कमलदल को श्याम के सामने ही।
थोड़ा थोड़ा विपुल जल में व्यग्र हो हो डुबाना।
यों देना ऐ भगिनि जतला एक अंभोजनेत्रा।
आँखों को हो विरह-विधुरा वारि में बोरती है।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के शीर्षक एवं रचनाकार का नाम लिखिए।
(ii) राधा अपनी आँखों को आँसुओं में डुबाये क्यों रखती है?
(iii) कवि ने इस पद्यांश में किस प्रसंग को व्यक्त किया है?
(iv) उपर्युक्त पद्यांश किस छन्द में है?
(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) यों प्यारे को विदित करके सर्व मेरी व्यथायें।
धीरे धीरे वहन कर के पाँव की धूलि लाना।
थोड़ी सी भी चरण-रज जो ला न देगी हमें तू।
हा! कैसे तो व्यथित चित को बोध मैं दे सकूँगी।।
पूरी होवें न यदि तुझसे अन्य बातें हमारी।
तो तू मेरी विनय इतनी मान ले और चली जा।
छू के प्यारे कमल-पग को प्यार के साथ आ जा।
जी जाऊँगी हृदयतल में मैं तुझी को लगाके।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) राधा पवन से क्या प्रार्थना करती है?
(iii) इस पद्यांश में किस प्रसंग को व्यक्त किया गया है?
(iv) इस पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ङ) कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो।
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को।।
यों देना ऐ पवन बतला फूल सी एक बाला।
म्लाना हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) मुरझाए हुए पुष्प की उपमा किससे की गयी है?
(iv) श्रीकृष्ण के कमलवत चरणों को कौन चूमना चाहता है?
(v) राधा पवन-दूतिका से मुरझाए हुए पुष्प को कहाँ डाल देने के लिए कह रही है?

(च) साँचे ढाला सकल वपु है दिव्य सौन्दर्यशाली।
सत्पुष्पों-सी सुरभि उसकी प्राण-सम्पोषिका है।
दोनों कन्धे वृषभ वर-से हैं बड़े ही सजीले।
लम्बी बाँहें कलभ कर-सी शक्ति की पेटिका हैं।
राजाओं-सा शिर पर लसा दिव्य आपीड़ होगा।
शोभा होगी उभय श्रुति में स्वर्ण के कुण्डलों की।
नाना रत्नाकलित भुज में केयूर होंगे।
मोतीमाला लसित उनका कम्बु सा कण्ठ होगा।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) नायिका ने कृष्ण की क्या-क्या विशेषताएँ बतायी हैं?
(iv) प्रस्तुत पद्यावतरण में नायिका ने किसे प्राण पोषिका के समान बताया है?
(v) प्रस्तुत कविता में किस छन्द का उल्लेख किया गया है?

(छ) नीले फूले कमल दल सी गात की श्यामता है।
पीला प्यारा वसन कटि में पैन्हते हैं फबीला।
छूटी काली अलक मुख की कान्ति को है बढ़ाती।
सद्वस्त्रों में नवल तन की फूटती सी प्रभा है।।
साँचे ढाला सकल वपु है दिव्य सौन्दर्यशाली।
सत्पुष्पों-सी सुरभि उसकी प्राण-संपोषिका है।
दोनों कंधे वृषभ-वर से हैं बड़े ही सजीले।
लम्बी बाँहें कलभ-कर सी शक्ति की पेटिका हैं।। **[2019 CT]**

प्रश्न– (i) राधा, पवन से कृष्ण को पहचानने का क्या उपाय बताती है?
(ii) 'अलक' तथा 'सकल' शब्द का अर्थ लिखिए।
(iii) 'कलभ-कर-सी' में कौन-सा अलंकार है?
(iv) रेखांकित अंश का भावार्थ लिखिए।
(v) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

(ज) सूखी जाती मलिन लतिका जो धरा में पड़ी हो।
तो पाँवों के निकट उसको श्याम के ला गिराना।
यों सीधे से प्रकट करना प्रीति से वंचिता हो।
मेरा होना अति मलिन औ सूखते नित्य जाना।।
कोई पत्ता नवल तरु का पीत जो हो रहा हो।
तो प्यारे के दृग युगल के सामने ला उसे ही।
धीरे धीरे सँभल रखना औ उन्हें यों बताना।
पीला होना प्रबल दुख से प्रोषिता सा हमारा।। **[2019 CW, CY]**

प्रश्न– (i) राधा पवन से पृथ्वी पर पड़ी हुई लता को क्या करने के लिए कहती हैं?
(ii) सूखी लता से राधा कृष्ण को क्या संदेश देना चाहती है?

(iii) पीले पत्ते को श्रीकृष्ण के सामने लाने से राधा का क्या अभिप्राय है?
(iv) उपर्युक्त पद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।
(v) पाठ का शीर्षक तथा रचयिता के नाम का उल्लेख कीजिए।
(vi) उपर्युक्त उद्धरणों में व्यक्त रस का नाम लिखकर उसके स्थायी भाव का उल्लेख कीजिए।
(vii) 'प्रोषिता-सा' में कौन-सा अलंकार है?
(viii) राधा सूखी और मलिन लतिका के माध्यम से पवनदूतिका के द्वारा क्या संदेश दिलाना चाहती है?

(झ) मेरे प्यारे नव जलद से कंज से नेत्र वाले।
जाके आये न मधुवन से औ न भेजा संदेसा।
मैं रो-रो के प्रिय-विरह से बावली हो रही हूँ।
जा के मेरी सब दुःख कथा श्याम को तू सुना दे।। [2020 ZH]

प्रश्न– (i) राधा किसके द्वारा कृष्ण को संदेश भिजवाती हैं?
(ii) कृष्ण का सौन्दर्य कैसा है? उल्लेख कीजिए।
(iii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iv) राधा की मनोदशा का वर्णन कीजिए।
(v) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

(ञ) जाते-जाते अगर पथ में क्लान्त कोई दिखावे।
तो जाके सन्निकट उसकी क्लान्तियों को मिटाना।
धीरे-धीरे परस करके गात उत्ताप खोना।
सद्गंधों से श्रमित जन को हर्षितों सा बनाना। [2020 ZJ]

प्रश्न– (i) राधा पवन को क्लान्त व्यक्ति के सम्बन्ध में क्या समझाती है?
(ii) राधा ने पवन को पथिक महिला के साथ कैसा व्यवहार करने के लिए निर्देश दिया?
(iii) कमल-मुख में कौन-सा अलंकार है?
(iv) रेखांकित अंश का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
(v) उपर्युक्त पद्यांश के पाठ का शीर्षक और उसके कवि का नाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) होने देना विकृत-वसना तो न तू सुन्दरी को।
(ख) होंठों की औ कमल-मुख की म्लानतायें मिटाना।
(ग) छू के प्यारे कमल-पग को प्यार के साथ आ जा।
2. हरिऔधजी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. "हरिऔधजी ने अपने 'प्रियप्रवास' में राधा और कृष्ण दोनों को ही आज के युग के अनुरूप नया स्वरूप प्रदान किया है।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?
4. हरिऔधजी ने 'पवन-दूतिका' प्रसंग में राधा को जो नया रूप प्रदान किया है, उसका निरूपण कीजिए।
5. राधा ने पवन को दूती बनाते हुए उसके आगे कृष्ण का जो स्वरूप चित्रित किया है, उसे अपने शब्दों में वर्णित कीजिए।

6. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **[2016 SC, SG, 17 MB, MG, 19 CO, 20 ZG]**
7. हरिऔध की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। **[2017 MB, MG]**
8. हरिऔध का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
9. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **[2020 ZK]**
10. हरिऔधजी ने राधा की वियोग-व्यथा का वर्णन करते हुए उन्हें जो लोक-मंगल की साधना में तत्पर होते हुए दिखाया है, उसे आप कहाँ तक उपयुक्त समझते हैं?
11. 'पवन-दूतिका' के आधार पर राधा का चरित्र-चित्रण कीजिए।
12. 'प्रियप्रवास' में हरिऔधजी की नयी उद्भावनाओं का विवेचन कीजिए।
13. ''हरिऔध मूलतः करुण रस के कवि हैं।'' 'पवन-दूतिका' के आधार पर इस कथन को समझाइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पाठ के आधार पर कृष्ण के स्वरूप की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. हरिऔधजी की रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।
3. हरिऔधजी की भाषा-शैली लिखिए।
4. 'पवन-दूतिका' द्वारा भेजे गये राधा के सन्देश को स्पष्ट कीजिए।

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

   (क) नीले फूले कमल दल सी गात की श्यामता है।

   (ख) मैं रो-रो के प्रिय विरह में बावली हो रही हूँ।
2. उपमा अलंकार का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत पाठ से एक उदाहरण लिखिए।